International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 01-01
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 18-09-2014
Accepted: 07-10-2014

डा. देवेश कुमार मिश्र
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

सम्पादक की लेखनी से.....

भाषासंसार में मानव मात्र को मूर्त या अमूर्त पक्ष में सर्वातिशायी भाव धरातल देनें में संस्कृत सामर्थ्यशाली हैं, कोई सन्देह नहीं। विविध ज्ञान – विज्ञान, अनुशासन, कला, व्यवहार आदि इस भाषा में संवलित है । संस्कृत का अध्ययन असंस्कृत नहीं बनाता और न ही अपसंस्कृति का विकास करने की प्रेरणा देता है । यद्यपि विश्व के सभी भूभागों में किसी न किसी भाषा का ही व्यवहार है तथापि निर्भय, निरापद, सहिष्णु, दयालु, साहसी, धैर्यवान, सहनशील और काम का आदमी बनाने की अपूर्व क्षमता एक मात्र इसी भाषा की सम्पत्ति है । संस्कृत का अध्येता इस भाषा को ठीक से निहार लेने के पश्चात् सहृदय सामाजिक हो जाता है । यदि केवल रोजगार के लिये पढ.ा हो तो कोई बात नहीं । औचित्य/ प्रयोजन / आसन्नता / दायित्व / उत्तरदायित्व के साथ – साथ मानववाद एवं मानवतावाद में निर्णय करने का विवेक संस्कृत भाषा सहज ही प्रदान करती है । आकार से असीमित / प्राकार से सुशोभित बिना उपकरण के ही ज्ञान – विज्ञान की सिद्धि का अनुभव कराने वाली यह भाषा नासमझों से मृतप्राय संज्ञा पाकर सुबुद्धों से अमृत बनी रहेगी । वैदिक ज्ञान राशि कल्पवृक्ष की भॉति सर्वदा सब कुछ देनें में इसीलिए समर्थ है ।

काव्य साहित्य नाटकादि के विविध पक्ष इस भाषा में गुम्फित होकर आर्द्रता / ममत्व / बन्धुता / लघुता में प्रभुता / आत्मदर्शन से लोकदर्शन की शिक्षा देते हुए मानव व्यवहार को सर्वदा से पुष्ट करते चले आ रहे है । राजनीतिक ज्ञान मीमांसा, शत्रु ज्ञान मीमांसा (शत्रु दर्शन) और प्रकृति से मैत्री की स्थितियॉ स्वाभाविक रूप से संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में उपदेशित कर रही है । आदिकाव्य की राजनीतिक ज्ञान परम्परा का अवलोकन आज की इक्कीसवीं शताब्दी के भारत में अवश्य ही पूर्ण प्रासंगिक हो सकते है । शपथ और प्रतिज्ञायें जिस प्रायोगिक अवस्था में उद्भासित है, आज उनका शब्दशः कथन ही शोभायमान है । **"योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन"** यह कथन किसी एक ही महर्षि के जीवन की सर्वातिशायी उपलब्धि है । अकल्मष ज्योतिष शास्त्र मानव मात्र का क्लेश दूर कर यहॉ तक कि समस्त भौतिक प्राप्तियों को भी श्रमशः दे सकता है । यह भी आर्यभट्ट, वराह, ब्रह्मगुप्त, लल्ल, वराहमिहिर, भास्कराचार्य आदि सरीखे सामाजिकों का अवदान है । इतिहास पुराणादि विभिन्न संस्कृतियों / परम्पराओं को समुद्घाटित कर व्यावहारिक द्वन्द्व से दूर करने की प्रेरणा देते है । इष्ट की प्राप्ति , अनिष्ट का परिहार लौकिक और अलौकिक उपायों से संस्कृत में सहज ज्ञेय है । अधुनातम साहित्याकाश भी युगपुरूषों / वैज्ञानिकों / योद्धाओं / कलाविदों / राजनीतिज्ञों और समाज सुधारकों की जीवन सरणि से आलोकित है । यही नहीं नख से लेकर शिख तक की लौकिक संस्कृतियों के गीत / गज्जलिका / सोहर / नकटा / विवाह आदि मांगलिक कार्यों में गेय अन्यान्य पद रचनायें आज भी राजेन्द्र मिश्र, राधावल्लभ त्रिपाठी आदि सहृदय संस्कृतभागी विद्वानों की लेखनी से प्रसूत हैं ..... । संस्कृत भाषा इसीलिए मृत न होकर अमृत है ।

मनुष्य लौकिक सुखों का अधिकारी अवश्य है व्यवहार सम्पन्न होने के कारण सांसारिक सुखों का लाभार्थी वही हैं । जन्तुओं का मनुष्य जन्य है किन्तु यह सब कुछ संस्कृत कविहृदय मनीषी सामाजिकों का प्रतिभा विलास ही है जो हमें प्रकृति से तादात्म्य और सभी से सहज व्यवहार की अबाध गतिशीलता में अनुप्राणित करता है । इसीलिए संस्कृत जगत निश्चित रूप से मानवमात्र की धरोहर है ।

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी